

इक़बाल मसीह - एक बाल-मज़दूर की सच्ची कहानी

यह कहानी अतीत के एक बाल-मज़दूर लड़के के बारे में हैं. कहानी सच्ची है और अब हम अपनी यात्रा शुरू करेंगे. 1995 की शुरुआत में, आप पाकिस्तान के किसी एक कस्बे में हैं. पाकिस्तान, पचास साल पहले ब्रिटिश शासित भारत से आज़ाद हुआ था. आप एक पुराने, हॉल में खड़े हैं और एक भाषण सुनने का इंतजार कर रहे हैं. भाषण वो लड़का देगा जिससे आप मिलने जा रहे हैं. उसका नाम है - इकबाल मसीह. ध्यान से देखने पर आप पाएंगे कि वहां ज़्यादातर दर्शक आपकी तरह ही छोटे लड़के हैं. लेकिन कई मायनों में वे आप जैसे नहीं भी हैं. बच्चे वहाँ चुपचाप खड़े हैं, और एक-दूसरे से कुछ बड़बड़ा रहे हैं. कुछ के चेहरे पर भूख साफ़ झलक रही है, कुछ के शरीर पर ज़ख्मों के निशान भी हैं.

कुछ लड़के इस तरह झुके हुए हैं जैसे कि वे बहुत बूढ़े हों. वे सभी गंदे, फटे कपड़े पहने हुए हैं, और उनके चेहरों से बच्चों की मासूमियत नदारद है. उनको देखकर ऐसा लगता है जैसे उन्होंने बहुत कम उम्र में, बहुत अधिक पीड़ा झेली हो. वे डरे और सहमे हुए लगते हैं.

फिर इकबाल मसीह कुछ बड़ी उम्र के लोगों के साथ हाल में प्रवेश करता है. एक आदमी उसका परिचय करता है और उसकी बहादुरी और बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करता है. वह दर्शकों को याद दिलाता है कि अगर किसी को मदद की ज़रूरत हो, तो वो उसे बताएं. अगर वो कुछ भी सहायता कर सकता है वो ज़रूर करेगा. आप इकबाल को नहीं देख सकते हैं. उसका भाषण सुनने में भी कठिनाई होती है. हाल में काफी गर्मी है, लोग हाथ से पंखा कर रहे हैं. वहां कोई माइक्रोफोन नहीं है.



फिर भी इकबाल की कही ज़्यादातर बातें समझ में आती हैं. वह उन युवाओं को उनके अधिकारों के बारे में बता रहा है. वो कहता है कि अगर वे पहले बंधुआ मजदूर थे, तो अब वे स्वतंत्र हैं. अब उन्हें अपने मालिक के लिए मज़दूरी करने की ज़रुरत नहीं है. बच्चों को बंधुआ मज़दूर बनाना न सिर्फ गलत है, पर बच्चों के साथ दुर्व्यवहार करना और उन्हें कम मज़दूरी देना भी कानून के खिलाफ है. वह उन्हें बताता है कि उन सभी को स्कूल जाने का अधिकार है, और यदि वे चाहें तो उसके लिए उन्हें मदद भी मिल सकती है.

कुछ बच्चे इक़बाल का भाषण ख़त्म होने से पहले ही वहां से चले जाते हैं. उनमें से एक लड़के ने फुसफुसाते हुए कहा कि अगर किसी को पता चल गया कि मैं इस मीटिंग में आया था तो मेरी ज़रूर पिटाई लगेगी. कुछ बच्चे अंत तक रुकते हैं. वो अब पहले से कम निराश हैं. उनमें कहीं कुछ उम्मीद की किरण जगी है. कुछ लड़के रुकते हैं और उन लोगों से बातें करते हैं जो इक़बाल के साथ आए थे, और जिन्होंने मदद करने का वादा किया था.

सबके जाने के बाद माहौल एकदम शांत हो जाता है. फिर इकबाल आपसे हाथ मिलाता है, और आप दोनों शहर में एक साथ टहलने के लिए जाते हैं. इक़बाल एक सुंदर लड़का है, लेकिन उसका शरीर पीड़ित है, वह इतना छोटा है कि वह बारह साल का नहीं दिखता है. उसकी पीठ मुड़ी हुई है और उसकी बाँहों और हाथों पर ज़ख्मों के निशान हैं. फिर आप दोनों एक सकरी गली में घुसते हैं, जिसमें दोनों तरफ छोटे, चौकोर घर हैं. वहां कुछ आदमी साइकिल पर जा रहे हैं और सड़क पर एक ट्रक जा रहा है. पूरा-का-पूरा ट्रक रंगीन सजावट से ढंका है. उसके बाद इकबाल अपनी कहानी सुनाना शुरू करता है.



मेरी कहानी भी ठीक उन बच्चों की कहानियों जैसी है, जिन्हें आपने अभी-अभी मीटिंग हॉल में देखा. शायद उसमें कुछ थोड़ा बहुत फर्क हो. मैं पंजाब के एक छोटे गाँव से आता हूँ जिसका नाम मुरीदके है. मेरे बड़े भाई की शादी हो रही थी और मेरे माता-पिता के पास दहेज़ के लिए पैसे नहीं थे. इसलिए उन्होंने एक शख्स से कर्ज लेने की बात सोची. क़र्ज़ के भुगतान के बदले में मुझे माता-पिता ने उस आदमी की कालीन फैक्ट्री में काम करने के लिए भेजा.

मैं चार साल का था जब मैं काम करने गया. उसके बाद से मैंने शायद ही कभी अपने परिवार को देखा. मैं बहुत छोटा और डर हुआ था, और जल्द ही मुझे उसका कारण समझ में आया. फैक्ट्री मालिक जानता था कि मेरे माता-पिता जैसे लोग बिलकुल पढ़े-लिखे नहीं थे, इसलिए वे लिखित करार (एग्रीमेंट) को पढ़ नहीं सकते थे. करार जैसी किसी चीज़ के बारे में भी उन्हें पता नहीं था. इसलिए फैक्ट्री मालिक, मेरे माता-पिता को काफी आसानी से धोखा दे पाया. क़र्ज़ पर वो जो सूद वसूल कर रहा था, वह मेरे काम के "भुगतान" से कहीं ज़्यादा था. इसलिए मेरे माता-पिता का कर्ज हर दिन बढ़ता ही रहा.

कारखाना चलाने वाले लोगों ने मेरे साथ बहुत क्रूर बर्ताव किया. कई बार उन्होंने मुझे एक करघे के साथ चेन से बाँध दिया, ताकि मैं दिन भर वहीँ बैठ कर काम करूं. क्योंकि मुझे खड़े होने तक की इज़ाज़त नहीं थी, इस वजह से मेरी पीठ झुक गई है. और रोज़ाना कई हजार गांठों को बांधने से मेरे हाथों में भी गांठे पड़ गई हैं. सालों तक कालीन की धूल की सांस लेने से मुझे दमा हो गया है और अब मुझे बहुत तेज़ी से सांस लेनी पड़ती है.

मेरे अलावा और भी कई बच्चे फैक्ट्री में काम करते थे. हमें दिन में बारह से चौदह घंटे तक काम करना पड़ता था, सप्ताह में सातों दिन. हमें बाहर जाने और खेलने तक नहीं दिया जाता था.



अगर हमारे मालिक को लगता था कि हमने कुछ गलती की है, तो हमारी खूब पिटाई होती. हमें स्कूल जाने या पढ़ने की कोई इज़ाज़त नहीं थी. हमें बहुत कम खाने को मिलता था और जो मिलता था उसमें पोषण बहुत कम होता था. हमारे कम-वेतन में से भी मालिक भोजन की कीमत काट लेता था. हमें अपने हाथ में कोई पैसा नहीं मिलता था क्योंकि वो हमारे माता-पिता का कर्ज चुकाने में चला जाता था.

जब मैं दस साल का हुआ तब एहसान उल्ला खान नाम के एक आदमी ने मुझे इस दुखी जीवन से बचाया. 1988 में, उन्होंने मेरे जैसे बच्चों को बंधुआ मजदूरी से मुक्त कराने के लिए "बॉन्डेड लेबर लिबरेशन फ्रंट" (BLLF) की स्थापना की. मैं एक वैसी ही बैठक में गया, जैसी मीटिंग आपने अभी देखी. वहां मुझे पहली बार पता चला कि अब बंधुआ बाल-श्रम गैर-कानूनी था. अपने अधिकारों के बारे में जानकर मुझे इतना अच्छा लगा कि जल्द ही मैं खड़े होकर मीटिंग में भाषण देने लगा. बाद में मेरा एक भाषण किसी समाचार पत्र में भी छपा! उसके बाद, मैंने अपने मैंने अपने "मालिक" के पास वापस जाने से इंकार कर दिया. फिर एहसान उल्ला खान ने मुझे एक ऐसे स्कूल में दाखिल कराया जो उन्होंने मेरे जैसे बच्चों के लिए ही शुरू किया था. मैं बीएलएलएफ (BLLF) में शामिल हो गया और, आज रात जैसी मीटिंग करके मैंने बहुत से बच्चों की बंधुआ मजदूरी से बचने में मदद की.



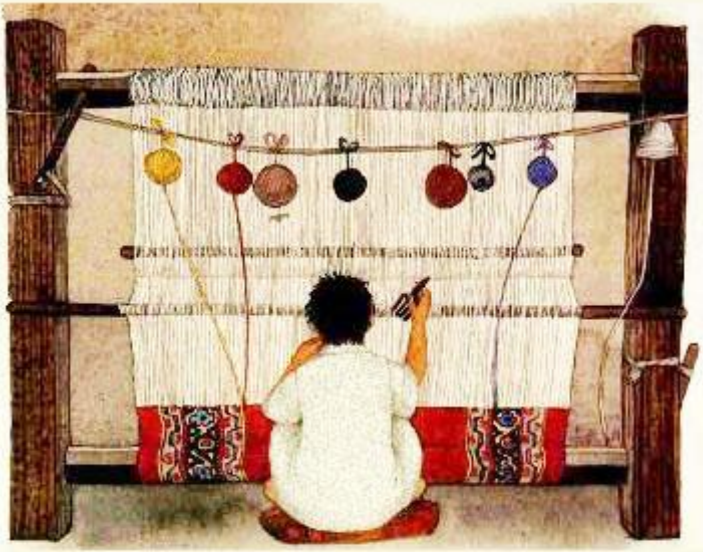
जल्द ही मैं संगठन के सर्वश्रेष्ठ वक्ताओं में से एक बन गया, और मेरे भाषण अखबारों में छपते रहे. मैं जल्द ही प्रसिद्ध हो गया, और मुझे अपना संदेश देने के लिए अमेरिका और यूरोप भेजा गया. अभी कुछ समय पहले, दिसंबर 1994 में मुझ रीबॉक प्राइज "फॉर यूथ इन एक्शन" मिला. यह एक अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार है! मुझे अपनी स्वतंत्रता और अपने अधिकारों को हासिल करने के लिए अन्य बच्चों की मदद करने में खुशी हो रही है. मुझे लगता है कि मैंने अब तक लगभग 3000 बच्चों बंधुआ मज़दूरी से बचाया है.



अब जब मैं स्कूल में हूँ, मुझे पढ़ाई और सीखना पसंद है. मैं अपने देश, और दूसरे मुल्कों में में बाल-मज़दूरी की समस्या के बारे में अधिक जानकारी हासिल कर रहा हूँ. पाकिस्तान में, हालांकि बंधुआ बाल-श्रम अब अवैध है, लेकिन उसको लेकर कभी कोई गिरफ्तारी नहीं होती है और बच्चे अभी भी फैक्टरियों में गुलामों जैसे काम करते हैं. कालीन बुनाई उद्योग बच्चों को सबसे ज़्यादा रोज़गार देने वाला है. शायद दस लाख से ज़्यादा या उससे भी अधिक बच्चे इस उद्योग में काम करते हैं.

फिर ये कालीन यूरोप और उत्तरी अमेरिका में अमीर ग्राहकों को बेंचे जाते हैं. उन्हें हमारे यहाँ के हालात का कुछ पता नहीं है. पाकिस्तान में ही नहीं, बल्कि भारत और बांग्लादेश में भी ऐसी ही हालत है.

दुनिया भर में, बच्चे सप्ताह के सातों दिन, लंबे घंटों तक कड़ी मेहनत करते हैं. चौदह वर्ष से कम आयु के 7.3 करोड़ से अधिक बच्चे विभिन्न प्रकार के उद्योगों में काम कर रहे हैं. उनमें से ज़्यादातर बच्चे एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में ही रहते हैं. उनके साथ बहुत बुरा सलूक होता है, और फिर उनके द्वारा बनाई गई चीजें अमीर पश्चिमी देशों में बेंची जाती हैं. इन बच्चों को कारखानों में, बड़ी पश्चिमी खिलौना कंपनियों के लिए खिलौनों की स्टफिंग, या फैंसी गाउन पर सालमे-सितारे टाकने, या सर्जिकल उपकरणों को धार देने के काम करने होते हैं.



उनमें से कुछ कांच या ईंट के कारखानों जैसी खतरनाक जगहों पर काम करते हैं जहाँ उन्हें कोई सुरक्षा नहीं मिलती है. बच्चे माचिस या आतिशबाजी बनाने के जोखिम भरे काम करने को मज़बूर हैं. जब बच्चे जलते हैं या उन्हें कोई चोट लगती है तब भी उन्हें कोई मेडिकल सहायता नहीं मिलती है. बहुत से कम-उम्र के बच्चे अमीर लोगों के घरों में नौकरी करते हैं, या वे हर दिन कई-कई घंटे गन्ने कटाई जैसे काम करते हैं.

मुझे पता है पूरी दुनिया में खासकर विकासशील देशों में बाल-मज़दूरों की संख्या बढ़ रही है. यह सच है कि गरीब देशों में गरीब परिवारों को जीवन यापन के लिए हर सदस्य की कमाई की जरूरत होती है. मुझे लगता है कि कड़ी मेहनत और अच्छी तरह से काम करना एक सम्मानजनक बात है. चाहें वे अमीर हों या गरीब, जो बच्चे अपने परिवार की मदद करते हैं, वे अपना योगदान देकर अच्छा महसूस करते हैं.

पर जब बच्चों को बड़े की तुलना में, कठिन या ज़्यादा काम करने को मजबूर किया जाता है वो बात गलत है. जब फैक्ट्री मालिक झूठ बोलकर परिवारों से बच्चों की चोरी करते हैं, वो एकदम गलत है. कभी-कभी फैक्ट्री मालिक मज़दूरी के लिए बच्चों का अपहरण भी करते हैं. काम के लिए सबसे छोटे बच्चों को अक्सर कोई वेतन नहीं मिलता है. मुझे नहीं लगता कि इससे गरीब परिवारों को कोई मदद मिलती होगी, उलटे उनके बच्चे और अधिक गरीबी और अज्ञानता में डूबते जाते हैं.

काम से होने वाली बीमारियों से बच्चे मर रहे हैं, या फिर वे मेरे जैसे कमज़ोर और अपंग हो रहे हैं. उन बच्चों को स्कूल जाने का कोई मौका नहीं मिलता है. अगर वे शिक्षित होते, तो वे कुछ और काम कर सकते थे. फिर वे मेरे माता-पिता की तरह ठगे नहीं जाते. बड़ों की बजाए बच्चों को नौकरी पर रखना और उन्हें कम-मज़दूरी देकर सताना, मारना-पीटना एक बड़ा अन्याय है. फैक्ट्री मालिक, बाल-मज़दूर इसलिए चाहते हैं क्योंकि बच्चे छोटे और बिल्कुल असहाय होते हैं.

आप देख सकते हैं कि इन मसलों के बारे में सोचते हुए मुझे बहुत गुस्सा आता है. लेकिन मुझे पता है कि मेरे बोलने का कुछ फर्क ज़रूर पड़ रहा है. यहां के कालीन उद्योग को पहले से ही लाखों डॉलर का नुकसान हुआ है क्योंकि पश्चिम में अमीर लोग गुलाम बच्चों द्वारा बनाए सामान को खरीदने से मना कर रहे हैं. मैं उम्मीद करता हू कि प्रसिद्धि मिलने के बाद मैं दुनिया में और अधिक लोगों तक अपना सन्देश पहुंचा पाऊंगा. मेरे लिए, बच्चे किसी भी देश के भविष्य की सबसे अमूल्य संपत्ति हैं. पर इसके लिए बच्चों का शिक्षित होना ज़रूरी है जिससे उन्हें अकुशल और उबाऊ कामों से मुक्ति मिल सके.

मैं अपने भविष्य के बारे में आशावान हूं. बड़े होकर मैं एक वकील बनना चाहता हूं, ताकि मैं बच्चों के खिलाफ अन्याय से लड़ने में उनकी मदद कर सकूं. अभी मेरी ज़िंदगी अच्छी चल रही है. मैं अब स्वतंत्र हूं. मैं अपने मां-बाप से मिलने जा सकता हूं, और अपने चचेरे भाइयों के साथ खेल सकता हूं.

मैं अब फिर से एक सामान्य जीवन जी रहा हूँ. वैसे मुझे नियमित रूप से मौत की धमकियाँ मिलती रहती हैं! उन धमकियों पीछे "कालीन माफिया" का हाथ है. वे नाराज फैक्ट्री मालिक हैं जो चीजों को पुराने तरीके से ही बनाए रखना चाहते है. वे बच्चों के कल्याण के बारे में बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते हैं. वैसे मैं इन धमकियों की बहुत ज्यादा परवाह नहीं करता हूँ.

अब मुझे जाना चाहिए. BLFF के साथी मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं. मुझे आप सब से मिलकर खुशी हुई. अब आप लोग घर जाएँ और जो कुछ मैंने कहा है उसे अपने परिवारों को बताएं, ठीक है? आप भी मदद कर सकते हैं, यह आप जानते हैं. अलविदा!

1995 के वसंत में इकबाल अपने गांव मुरीदके का दौरा करने के लिए घर गया. 16 अप्रैल को वो अपने दो चचेरे भाइयों के साथ एक साइकिल की सवारी कर रहा था, जब उसकी रहस्यमय परिस्थितियों में गोली मारकर हत्या कर दी गई. उस समय वो केवल बारह वर्ष का था.

उसकी हत्या का मामला कभी हल नहीं हुआ, लेकिन "कालीन माफिया" पर लोगों को पूरा शक था. इकबाल मसीह बाल-मज़दूरी की बुराइयों को उजागर करने में इतना सफल रहा कि पाकिस्तान को एक वर्ष की बिक्री में लगभग 1.4 करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुक्सान हुआ. यदि कारखानों के मालिक इस हत्या के पीछे थे तो इससे उन्हें और ज़्यादा नुक्सान ही हुआ. क्योंकि दुनिया ने इस भयानक खबर सुनने के बाद पाकिस्तान का माल खरीदना कम किया. उससे बिक्री में एक करोड़ डॉलर की और गिरावट आई.

इकबाल मसीह की हत्या की खबर एक बारह वर्षीय लड़के ने सुनी. वो टोरंटो, ओंटारियो, कनाडा में रहता था. क्रेग किलबर्गर ने इकबाल मसीह के बारे में पहले कभी नहीं सुना था. लेकिन जब उसने इक़बाल की हत्या के बारे में पढ़ा तो वो इतना परेशान हुआ कि उसने बाल-श्रम से लड़ने के लिए बच्चों के लिए एक स्वयंसेवक संगठन की स्थापना की. इसे "फ्री द चिल्ड्रेन" कहा जाता है.

बाल-श्रम की बुराइयों को प्रचारित करने के क्रेग के प्रयास इतने सफल हुए और उसके लिए उसने पूरी दुनिया का चक्कर लगाया. वहां उसने अलग-अलग सरकारी एजेंसियों के प्रमुखों से बातचीत की और बीआईएलएफ जैसे संगठनों के लिए पैसे जुटाए ताकि वे बच्चों को गुलामी से मुक्त करा सकें और उन्हें घर और शिक्षा उपलब्ध करा सकें. क्रेग ने लोगों से आग्रह किया कि बच्चों को मुक्त करने में मदद के लिए वे केवल "रगमार्क" लेबल वाले कारपेट ही खरीदें. उन कालीनों की गारंटी होती है कि वे बाल-श्रम से नहीं बने हैं. क्रेग ने कई देशों में "फ्री द चिल्ड्रेन" की शाखाएं स्थापित कीं.

दुनिया भर में कई अन्य संगठन हैं जो बाल श्रम को समाप्त करने के लिए काम कर रहे हैं. बस कुछ अन्य संगठन हैं: संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से यूनिसेफ; इंग्लैंड में बाल-अधिकार सूचना नेटवर्क; जिनेवा, स्विट्जरलैंड में चाइल्ड लेबर के उन्मूलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम; न्यूजीलैंड में "सेट द चिल्ड्रन फ्री; ऑस्ट्रेलिया में कम्युनिटी ऐड अब्रॉड; और अमरीका में यू.एस. चाइल्ड लेबर गठबंधन कार्यरत हैं. यदि आप इसमें मदद करना चाहते हैं, तो आप उनमें से किसी भी संगठन से संपर्क कर सकते हैं. इस तरह के अन्य संगठनों को आप इंटरनेट पर आसानी से खोज सकते हैं.

इकबाल मसीहा उस आदर्श के लिए शहीद हुआ, जिसमें उसका विश्वास था, लेकिन उसने जीवन और मृत्यु दोनों में, कुछ महत्वपूर्ण हासिल किया. जीवन में, उसने अन्य बच्चों को दिखाया कि सिर्फ छोटे होने से वे असहाय नहीं होते.

उसके काम ने अन्य बच्चों को राहत के साथ-साथ आशा भी दी. साथ में उसने उन्हें स्वतंत्र होने में भी मदद की. इकबाल की हत्या भी उसके द्वारा शुरू किये गए काम को रोक नहीं सकी. उसके मुहिम को अन्य बच्चों ने आगे बढ़ाया जिसमें अमीर देशों के क्रेग किलबर्गर जैसे बच्चे शामिल थे. इससे बच्चों को यह पता लगा की दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने में वे भी कुछ मदद कर सकते हैं, और वे भी युवा नायक बन सकते हैं.

समाप्त

